2019.01.0644

संडे मेल साप्ताहिक
४ मार्च १९९० 94

हत्यारे : मासूमों की नींद से सपने भगाने वालों का पर्दाफाश

जयपुर से विजय विद्रोही

आखिर ऐसा क्या है इस 'हत्यारे' में जो दर्शकों को दिल से छूता है? ढोलक की थाप सुनते ही वे खिंचे चले आते हैं, और उसका यह आकर्षण आज गुलाबी नगरी में एक ऐसे आंदोलन का रूप ले चुका है जो सांप्रदायिकता की सूरत बदल देने को बेताब है.

नवंबर के दंगों के दौरान जब जयपुर शहर में अखबारों की काली कतरनों की चील जैसी उड़ाने थी. लड़कियों के गायब होने और उनके साथ शारीरिक उत्पीड़न की अफवाहों पर लोग यकीन करने लग गये थे, पुलिस-प्रशासन की गैर-जिम्मेदारी और लापरवाही को देख गुंडों एव सांप्रदायिक तत्वों की चांदी हो रही थी. सारा शहर जब दहशत, खौफ और अविश्वास के कटघरे में सहमा-दुबका खामोश नजरों से सेना की गाड़ियों को देखने को मजबूर था, उस समय रविंद मंच के लॉन पर कुछ लोग मिल रहे थे, सोच रहे थे.

बुद्धिजीवियों-रचनाकारों-नाट्यकर्मियों, चितेरों ने अपनी किस्म की पहली और अनोखी लड़ाई लड़ने का निश्चय किया. कोई बैनर नहीं, कोई संस्था नहीं, कोई राजनीतिक विचारधारा नहीं, 'शांति-प्रयास' की तख्ती तले रामनिवास बाग के नुक्कड़ पर कविता पोस्टर प्रदर्शनी, पोस्टर पंतगों पर संदेश और सामूहिक रूप से ऐलान-सांप्रदायिक ताकतों, हम आ गये हैं'. हमारी कविता की काली स्याही को तुम्हारा त्रिशूल नः मार सकता है और ना ही तुम्हारी कतोर, हमारी कुची रंग-ब्रुश ने तुम्हें पहचान लिया है. अब तुम्हारी खैर नहीं. कृष्ण कल्पित, सत्यनारायण, अशोक अग्रवाल, राजेंद साईवाल ने यह कार्य एकेश्वर, सुरेंद जोशी के साथ मिलकर संभाला तो उधर रंगकर्मी साबिर खान ने नुक्कड़ नाटक की उपयोगिता को पहचाना.

जन संस्कृति मंच के एक नुक्कड़ नाटक को जयपुर के दंगों के दौरान उठी अफवाहों और घटनाओं को मद्देनजर रख परिवर्तित किया गया और जन्म हुआ 'हत्यारे' का. और यह सब शहर के कर्फ्यूग्रस्त इलाकों (परकोटे) के महज १०० गज की दूरी पर हो रहा था. अंदर सेना की गाड़िया चौड़ी सड़कों को रौंद रही थी, फौजी बूट मासूमों की नींद से सपनों को भगा रहे थे, तनी स्टेनगन खिड़कियां बंद करने को विवश कर रही थी, नेताओं के 'प्रायोजित' दौरे थे तो रामनिवास बाग में प्रेम था.

२७ नवंबर को गिद्धों ने शहर को लाश बनाने का काम शुरू किया था तो एक दिसंबर से ही 'शांति-प्रयास' के रूप में संजीवनी की खोज शुरू हो गयी थी. ९ दिसंबर को नुक्कड़ नाटक 'हत्यारे' ने अपनी धार को जनता के सामने रखा और उसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा. प्रोसीनियन वाले मंच का पल्लू छोड़ने में झिझक रहे थे. उधर जयपुर में पहली बार ऐसा नुक्कड़ नाटक खेला जा रहा था जिसके पीछे विचार था तो मात्र यही कि शहर में उत्पन्न अविश्वास को कैसे विश्वास में बदला जाये.

एक भले काम के लिए अलग-अलग संस्थाओं ने नाट्यकर्मी पहली बार नुक्कड़ पर एक साथ थे, किसी ने ढोलक थाम रखी थी तो कोई दरी उठाये था, कोई काले-सफेद चोगों की कतरी लटकाये था तो कोई अगले शो का स्थान तय कर रहा था. कर्फ्यू के हटते ही टोली ने परकोटे का कोई नुक्कड़, कोई चौराहा कोई मौहल्ला ऐसा नहीं छोड़ा जहां ढोलक की थाप के साथ गूंज न गूंजी हो. **'मंदिर-मस्जिद गिरिजाघर में बांट लिया भगवान को, धरती बांटी सागर बांटा मत बांटों इंसान को या ले मशालें चल पड़े है लोग मेरे गांव के, अब अंधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गांव के.'** कहीं रात दस बजे मशालों की रोशनी में नाटक हुआ तो कई बार एक दिन में आठ-आठ शो तक खेले गये.

आखिर ऐसा क्या है इस 'हत्यारे' में जो दर्शकों को दिल से छूता है? ढोलक की थाप सुनते ही वे खिंचे चले आते है और जो एक सशक्त आंदोलन का रूप ले चुका है. हत्यारे में जयपुर शहर के जवाहरात उद्योग को लिया गया है जिसकी खासियत यही है कि यहां कारीगर मुसलमान है और व्यापारी हिंदू सब कुछ व्यवस्थित रूप से चल रहा है कि चुनावों का समय आता है. सत्ता और विपक्षी पक्ष के नेता धर्म-संप्रदाय मस्जिद मंदिर के नाम पर वोट मांगते है, गुंडे पालते है जो कारीगरों के दोस्ताना कबड्डी के खेल का फायदा उठाकर रफीक और रामकृष्ण की हत्या कर देते है. सूत्रधार आता है 'हमारे देश में अगर ठाकुर कंजर को मार दे या ब्राह्मण चमार को तो कुछ नहीं होता. अगर हिंदू मुसलमान को या मुसलमान हिंदू को मार दे तो आग लग जाती है आग. खून के दरिया बह जाते हैं, दरिया और जयपुर में तो इस किस्म की घटनाओं की शुरुआत ही हुई है.'

'हत्यारे' का दृश्य

सूत्रधार सरकार को खबर करने जाता है जो सो रही है सरकार नींद से जागती है, टालमटोल आश्वासन देकर सूत्रधार को भगा देती है. सत्ता पक्ष का नेता गुंडों को पुलिस बनाकर दंगाग्रस्त इलाकों में भेजता है. उधर सरकारी माध्यम दंगों की घटा-घटा कर खबर देते हैं तो अखबार वाले बढा-चढा कर. गुंडे लड़कियों के गायब होने की अफवाहें उड़ाते हैं. पिता सादिक और हरिकृष्ण अस्पताल में अपने बेटों की लाश पर रोते है. उधर दोनों नेता एक दूसरे पर आरोप लगाते है, कुत्तों की तरह भौंकते हैं. सूत्रधार 'यह अस्पताल है, विधानसभा नहीं.'

नेता दोनों बापों को भड़काते हैं. दोनों खूनी नजरों से एक दूसरे को घूरते है. चाकू लहराते हुए आगे बढ़ते हैं. नेता और गुंडे पीछे से भड़काते हैं. अब क्या होगा? दर्शक सांस रोके, तनी मुट्ठी में कसा चाकू देखते है. दोनों बाप गले मिल जाते है. दर्शक चैन की सांस लेता है. नेता दोनों की हत्या का हुक्म सुनाते है.

आकाशवाणी से समाचार 'दो दंगाई पुलिस एनकाउंटर (मुठभेड़) में मारे गये'. हॉकर चीखते है — 'आज की ताजा खबर'. सूत्रधार दर्शकों से पूछता है — 'आप में से कोई पहचान सकता है कि इन कलाकारों में कौन हिंदू है, कौन मुसलमान. कोई भी धर्म आपसे लड़ने को नहीं कहता. आपको लड़ाते है, आपकी पीठ में छुरा भौंकने वाले बगुला भगत.'

दर्शक कलाकारों से मिलते है, अते-पते जानकर खुश होते हैं (जयपुर के ही लोग है) बधाइयां देते है, टिप्पणियां करते है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि 'हत्यारे' में कलाकार कौन है? अजीज मोहम्मद (पिता का रोल) की दंगों में दुकान जला दी गयी थी. वो नुक्कड़ नाटक से सिर्फ इसलिए जुड़े कि कम से कम आगे फिर कभी किसी की दुकान न जले, इतना लोग समझ जायें तो बहुत है. राजीव सोनी व अजय मेहरा (बेटे) ने पहली बार नाटक किया है. धनेष वार्ष्णेय ने नुक्कड़ नाटक को इतनी प्राथमिकता दी कि उन्होंने नाटक 'सखाराम बाईंडर का' प्रदर्शन तक स्थगित कर दिया. 'मुझे पहली बार पता चला कि नुक्कड़ नाटक में कितनी गहराई है. जनता के बीच, जनता के लिए नाटक करना यानी सीधे सीधे संवाद. सच में, मेरा तो सारा 'कंसेप्ट' ही बदल गया. गुंडे का काला चोगा पहनते हुए वो कहते हैं. इसके अलावा डा. प्रदीप भार्गव (अर्थशास्त्री) वीरज कुलश्रेष्ठ (पत्रकार) अनूप सोनी, राजेश गोयल (रंगकर्मी), गजराज कर्णावत, दिनेश प्रधान, अब्बास (विद्यार्थी) डा सत्यनारायण (लेखक), सुरेंद्र शोवर, अजीत, शकील, कुरेशी (पत्रकार) राजेंद साईवाल और लेखक स्वयं एक मिशन के तहत नुक्कड़ नाटक में भाग लेते रहे हैं.

एक जनवरी को सफदर हाशमी को पचासवें शो के साथ श्रद्धांजलि दी. २० जनवरी को (४१ दिनों में) १०० शो पूरे हुए, ११ फरवरी को १२५ वां शो पूरा हुआ. अभी भी कलाकारों के उत्साह में किसी तरह की कमी आयी है और न ही दर्शकों की प्यास ही शांत हुई है. 'कोई एक कारण बताओ कि हम 'हत्यारे' के प्रदर्शन बंद कर दें?' निर्देशक साबिर खान के सवाल का जवाब यही है कि हत्यारे के प्रदर्शन अगर बंद हुए तो उन्हें इसके कारण बताने पड़ेंगे□